Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

Renu Mittal*

Assistant Professor, RKSD College, Kaithal, Haryana

सार – *उपन्यास वास्तव में साहित्य की नवीनतम विधा है, यही कारण है कि अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में इसका नामकरण तक नवीन शब्दों द्वारा किया गया है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का विचार है कि "उपन्यास भारत तथा विदेश दोनों में ही आधुनिक युग की उपलब्धि है एवं उसका आगमन भी नवीन युग के आगमन का सूचक है। भारत में उपन्यास का उदय आधुनिक चेतना की अभिव्यक्ति के कलात्मक माध्यम के रूप में होता है। विधेयवाद के जनक 'अगस्त कॉमते' के विचारों का प्रभाव केवल यूरोपीय उपन्यास तक ही सीमित न रहकर भारतीय उपन्यास के विकास पर भी पड़ा है। "भारत में उपन्यास के विकास का मार्गदर्शन करने वाले और भारतीय उपन्यास की संभावनाओं को साकार रूप देनेवाले बंगाल के बंकिमचंद्र के उपन्यासों की रचनादृष्टि के पीछे विधेयवाद की सर्जनात्मक भूमिका को अनेक आलोच कों ने स्वीकार किया है।वास्तव में, भारत में उपन्यास का उदय अभिषप्त स्थितियों में हुआ। भारत में उपन्यास का जन्म 19वीं सदी के मध्य में तब हुआ जब भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व था। यूरोप में उपन्यास का उदय जिन परिस्थितियों में हुआ वे परिस्थितियाँ भारत के संदर्भ में ठीक विपरीत थीं। भारत में न यूरोप की तर्ज़ पर औद्योगीकरण हुआ, न ही मध्यवर्ग का विकास।*

----------X----------

प्रस्तावना

साहित्य के इतिहास में 'उपन्यास' एक प्रमुख आधुनिक विधा है। उपन्यास ने इतनी लोकप्रियता अर्जित कर ली है कि आज काव्य और नाटक दोनों ही इससे पिछड़ गये हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि जीवन की परिस्थितियों में जैसे-जैसे परिवर्तन आते हैं वैसे ही साहित्यगत अभिव्यक्ति की विधाओं में भी परिवर्तन होता जाता है। पहले कथा साहित्य को केवल मनोविनोद और शब्द क्रीड़ा के रूप में देखा जाता था परंतु हमारे देखते-देखते वही कथा अब उपन्यास का विकसित रूप प्राप्त कर साहित्य की अत्यंत सम्मानित विधा बन गयी है। यहाँ तक कि विद्वानों ने उसे आधुनिक युग के महाकाव्य की संज्ञा दी है। मिषेल जेराफा लिखते हैं कि- "उपन्यास ऐसी कला है जिसमें मनुष्य सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से निरूपित होकर सामने आता है।"

उपन्यास वास्तव में साहित्य की नवीनतम विधा है, यही कारण है कि अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में इसका नामकरण तक नवीन शब्दों द्वारा किया गया है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का विचार है कि "उपन्यास भारत तथा विदेश दोनों में ही आधुनिक युग की उपलब्धि है एवं उसका आगमन भी नवीन युग के आगमन का सूचक है।" भारत में उपन्यास का उदय आधुनिक चेतना की अभिव्यक्ति के कलात्मक माध्यम के रूप में होता है। विधेयवाद के जनक 'अगस्त कॉमते' के विचारों का प्रभाव केवल यूरोपीय उपन्यास तक ही सीमित न रहकर भारतीय उपन्यास के विकास पर भी पड़ा है। "भारत में उपन्यास के विकास का मार्गदर्शन करने वाले और भारतीय उपन्यास की संभावनाओं को साकार रूप देनेवाले बंगाल के बंकिमचंद्र के उपन्यासों की रचनादृष्टि के पीछे विधेयवाद की सर्जनात्मक भूमिका को अनेक आलोच कों ने स्वीकार किया है।"

वास्तव में, भारत में उपन्यास का उदय अभिषप्त स्थितियों में हुआ। भारत में उपन्यास का जन्म 19वीं सदी के मध्य में तब हुआ जब भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व था। यूरोप में उपन्यास का उदय जिन परिस्थितियों में हुआ वे परिस्थितियाँ भारत के संदर्भ में ठीक विपरीत थीं। भारत में न यूरोप की तर्ज़ पर औद्योगीकरण हुआ, न ही मध्यवर्ग का विकास। भारत में उपनिवेशवाद का एक अलग ही स्वरूप दिखायी देने लगा था। उपनिवेशवादी व्यवस्था में यहाँ जिस मध्यवर्ग का उदय हुआ है वह यूरोप से बिलकुल भिन्न था। भारत में मध्यवर्ग का विकास सबसे पहले बंगाल में हुआ। भारत में यही मध्यवर्ग आरंभिक दिनों में उपन्यास के लेखक तथा पाठक के रूप में उभर कर सामने आये। मध्यवर्ग का विकास प्रथमतः बंगाल में होने के कारण उपन्यास का जन्म भी प्रथमतः बंगला में ही हुआ। "बंगला में पहले उपन्यास के विकास का एक कारण यह भी था कि वहाँ पत्र-पत्रिकाओं का विकास भारत की दूसरी भाषाओं से पहले हुआ। आमतौर पर

www.ignited.in

यह माना जाता है कि प्यारेचंद मित्र का 'अलालेर घरेर दुलाल' पहला भारतीय उपन्यास है। यह पहले 1854 में प्रकाशित होने वाले 'मासिक पत्र' में धारावाहिक छपा और 1858 में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।

भारत में उपन्यास का प्रवेश मौलिक रचनाओं से न होकर अनुवाद के माध्यम से हुआ। पाश्चात्य उपन्यासों की रूप संरचना से प्रभावित होकर भारत के नागरिकों ने अपनी-अपनी निजी भाषाओं में अनुवाद का कार्य आरंभ किया। भारत में समस्त भाषाओं में उपन्यास साहित्य का आरंभ, पश्चिम की भाषाओं से अनूदित व विभिन्न दूसरी भाषाओं से अनूदित उपन्यासों से होता है। अंग्रेजी उपन्यासों के रूपांतरण भी बहुत तेजी से हो रहे थे। अंग्रेजी के उपन्यासों के हिंदी रूपांतरण 'लंदन रहस्य', 'लैला' और 'टाम काका की कुटिया' भी इस युग में प्रकाशित हुए। पश्चिम से उपहार स्वरूप में मिला उपन्यास का जो रूप अंग्रेजी के माध्यम से सामने आया, वही रूप भारत के संदर्भ में उपन्यास रचना के लिए आदर्श बन गया। इतना ही नहीं अंग्रेजों का यह साहित्य भारतीय मध्यवर्ग के लिए श्रेष्ठ तथा आदर्श होता था। भारत की विभिन्न भाषाओं में अंग्रेजी के रहस्य-रोमांस, जासूसी और सतही यथार्थवाद के उपन्यासों के अनुवादों की भरमार थी। 19वीं सदी के मराठी उपन्यासों पर अंग्रेजी उपन्यासों के प्रभाव की चर्चा करते हुए विश्वनाथ काषीनाथ राजवाड़े ने लिखा है कि- "भारतीय यथार्थवादी उपन्यासों का मूल स्रोत ही विदेशी नहीं है, बल्कि नमूने के तौर पर जिन उपन्यासों को चुना वे भी वहां के सामान्य स्तर के उपन्यास ही रहे हैं। जिन्हें विदेशों में यथार्थवादी उपन्यासों के मूल स्रोत कहा जा सकता है, ऐसे बेहतरीन उपन्यासों से प्रेरणा पाकर लिखने वाले यहाँ शायद ही हैं। अंग्रेजी के उपन्यासकारों में हीन स्तर के रोनाल्डस के घटिया उपन्यास का आस्वादन करने वाले माई का लाल अपने यहाँ अधिक हैं। बहुत हुआ तो कुछ लेखकों ने रोनाल्ड से परे छलांग लगायी और मुश्किल से पहुँचे तो मिसेज हेनरी वुड, लार्ड रीटन, जैसे सामान्य लेखकों तक ही। हिंदी के आरंभिक उपन्यासकारों ने भी अनुवाद द्वारा बंगला, मराठी तथा उर्दू में लिखे उपन्यासों को हिंदी में प्रस्तुत किया।

किसी देश का आर्थिक परिवर्तन वहाँ के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक परिवर्तन का आधार होता है। अंग्रेजी राज्य ने भारत पर एक नई आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था लाद दी। जिससे मध्यकालीन सामंतवाद का क्षय और आधुनिक पूँजीवाद का उदय हुआ। शिक्षा, शासन और समाज के नवगठन से जिस मध्यवर्ग का उदय हुआ था, उससे मध्यवर्गीय समाज साहित्य, कला और संस्कृति का संगम बन गया। एक तरह से मध्यवर्ग के द्वारा मध्यवर्ग के लिए उपन्यासों की सृष्टि होने लगी। मानवतावादी दृष्टि उपन्यास की प्रमुख प्रेरक शक्ति बनी।

मौलिक उपन्यासों के संदर्भ में यह द्रष्टव्य है कि प्रत्येक लेखक अपने-अपने देश की परंपराओं से जुड़ी सुदूर अतीत में प्रवेश करने की प्रवृत्ति और खोज की सामान्य प्रक्रिया प्रायः प्रत्येक देश में देखी जाती है। इससे संभवतः लेखक के राष्ट्रीय अहं की तुष्टि होती है। हिंदी साहित्य भी इस दृष्टि से अपवाद नहीं रहा। हिंदी साहित्य में जहाँ कहीं भी उपन्यास और कहानियों के जन्म और विकास के संबंध में थोड़ा-सा भी अंश मिलता है, तो उन्हें बहुत पीछे खींच ले जाने का उत्साह प्रायः लेखकों में पाया जाता है। हितोपदेश, बृहत्कथा, जातक, पंचतंत्र, योगवशिष्ठ आदि में कथा के तत्व निस्संदेह विद्यमान हैं। भारतीय साहित्य में मध्ययुग में लिखे अनेक प्रेमाख्यान या प्रेमकथाएँ इसी कोटि में रखी जा सकती हैं। किंतु इसी को आधार मानकर उन्हें आधुनिक उपन्यास और कहानी के समकक्ष नहीं रख सकते। "धर्म और नैतिकता एवं उपदेशात्मकता उन्हें आधुनिक कथासाहित्य से अलग करती हैं। जो साहित्यिक विधा आज उपन्यास और कहानी नाम से अभिहित की जाती है वह कला, उद्देश्य और विषयपरिधि की दृष्टि से नितांत आधुनिक विधा है, उसका वपनकाल ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध है और वह अंग्रेजी तथा अंग्रेजी के माध्यम द्वारा यूरोपीय साहित्य के साथ स्थापित संपर्क के फलस्वरूप जन्म धारण कर सकी।

भारतीय उपन्यास पर पाश्चाय प्रभाव

भारत में जब उपन्यास का विकास हुआ तब भारत का परिवेश पश्चिम से बिलकुल अलग था। हालाँकि उपन्यास का जन्म कहे या विकास भारत तथा पश्चिम में पुनर्जागरण के काल में ही हुआ। एशिया में अपने व्यापार को विस्तृत करने के लिए अंग्रेजों ने यहाँ के घरेलू और विदेशी व्यापार को नष्ट कर दिया। इससे वे भारत पर अपने राजनीतिक प्रभुत्व को स्थापित करने में सफल रहे। भारतीय सूती माल की माँग में कमी होने लगी। इस संदर्भ में एंगेल्स का एक वाक्य मनन करने योग्य है – "यह बात मजे में कही जा सकती है कि अफगान युद्ध, सिंध और पंजाब की विजय, के समय तक भीतरी एषिया से इंग्लैंड का व्यापार लगभग शून्य था।"[9] इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के बावजूद यूरोप और अमरीका में ज्यादा माँग भारत के सूती माल की थी न कि अंग्रेजी माल की। भारत पर राजनीतिक प्रभुत्व को कायम करके अंग्रेजी इस माँग को धीरे-धीरे कम करते गये, खुली आर्थिक प्रतिद्वंद्विता से इस कमी का कोई संबन्ध न था। सन 1813 ई. से भारतीय सूती माल की माँग कम होती

www.ignited.in

गई, पर वह सन 1830 ई. तक पूरी तरह समाप्त न हुई थी। संभवतः वह इसके बाद भी जारी रही। सन 1853 ई. में तुर्कों और अंग्रेज़ों के व्यापारिक संबंधों का विवेचन करते हुए एंगेल्स ने लिखा था कि – "भारत पहुँचने के सीधे मार्ग का पता लगाने तक कुस्तुंतुनिया विस्तृत व्यापार की मंडी था।"

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जब एक देश का शासन-सूत्र एक सत्ता से दूसरी सत्ता में या फिर अन्य जाति को हस्तांतरित होने से देश में बहुत सारे परिवर्तन होने लगते हैं। भारत की स्थिति भी कुछ ऐसी ही रही है। भारत पर लंबे समय तक विदेशी प्रभुत्व रहा। प्रथमतः हिंदू राजाओं के हाथ से राजसत्ता निकल कर मुगलों के हाथ में गई। मुगल साम्राज्य का पतन हुआ, तो राजसत्ता एक अन्य विदेशी जाति - अंग्रेजों के हाथ में चली गई। इस प्रकार सत्ता बदलने से बहुत से परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन विशेष रूप से, यहाँ के जन-जीवन, समाज, राजनीति, संस्कृति तथा साहित्य के क्षेत्र में दिखाई देने लगे।

आर्थिक नीति

साहित्य बदलती हुई अभिरुचि तथा संवेदनाओं से संबंधित है। अभिरुचियों तथा संवेदनाओं के बदलाव का सीधा संबंध आर्थिक और चिंतनात्मक परिवेश से जुड़ा है। राजनीतिक घटनाओं का बहुत बड़ा प्रभाव आर्थिक परिस्थिति पर और फलतः देश के सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा। भारत में आर्थिक जीवन के लिए प्रमुख केंद्र यहाँ के गाँव रहे हैं। आधुनिक काल से पूर्व भारतीय गाँवों का आर्थिक ढाँचा प्रायः अपरिवर्तनीय और स्थिर रहा है। गाँव स्वतःपूर्ण आर्थिक इकाई थे। इनकी अपरिवर्तनशीलता को देखते हुए सर चार्ल्स मेटकाफ ने लिखा है – "गाँव छोटे-छोटे गणतंत्र थे। उनकी अपनी आवश्यकताएँ गाँव में ही पूरी हो जाती थीं। बाहरी दुनिया से उनका कोई संबंध नहीं था। एक के बाद दूसरा राजवंश आया, एक के बाद दूसरा उलटफेर हुआ; हिन्दू, पठान, मुगल, सिक्ख, मराठों के राज्य बने और बिगड़े पर गाँव वैसे के वैसे ही बने रहे।

उपन्यास

यह निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता कि यूरोप ने कब मध्यकालीन परंपराओं को छोड़कर आधुनिक संस्कृति को अपना लिया। फिर भी मोटे तौर पर इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि "पंद्रहवीं शताब्दी का इतिहास यूरोप के नवजागरण के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। संभवतः इसी काल में यूरोप के विकास की नींव पड़ी। इसी समय यूरोप में प्राचीन विद्या, साहित्य और कला इत्यादि का पुनरुद्धार हुआ, फलस्वरूप इसे पुनर्जागरण का काल कहते हैं। यह मनुष्य एवं समाज के बहुमुखी विकास का काल था, जिसमें विचारों और चिंतन के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ।"[51] इस पुनर्जागरण के फलस्वरूप जनता में परंपरा के प्रति अरुचि और बौद्धिकता के प्रति आस्था दिखाई देने लगी। लोगों में विचार-स्वातंत्र्यता की भावना विकसित होती गई तथा उनकी चिंतन-शक्ति को एक नयी दिशा प्राप्त हुई। इससे साहित्य में एक नयी विधा का जन्म हुआ और उसी को आज हम आधुनिक काल की विधा 'उपन्यास' की संज्ञा देते हैं।

देवरानी जेठानी की कहानी (पं. गौरीदत्त सन 1870 ई.)

पहली बार 'देवरानी जेठानी की कहानी' उपन्यास की 500 प्रतियाँ 1870 ई. में मेरठ के जियाई छापेखाने में छापी गईं। पं. गौरीदत्त ने 'देवरानी जेठानी की कहानी' स्त्रियों को पढ़ने-पढ़ाने के लिए लिखी थी। उनकी यह पुस्तक स्त्री-शिक्षा संबंधी दूसरी पुस्तकों से एकदम अलग-सी थी। उपन्यास को नए रंग-ढंग में लिखा गया था। इसकी कथा में स्वाभाविकता का समावेश था, जो प्रतिदिन के जीवन में हर पल दिखाई देता है। कथानक सीधा-सादा, नितांत घरेलू था। कथा घरेलू जीवन से संबंधित थी, तो इसको घरेलू भाषा में ही लिखा गया है। इस उपन्यास में हम शहरी मध्यवर्ग के विकास की प्रक्रिया का आरंभिक रूप देख सकते हैं।

इस उपन्यास का नायक सर्वसुख है। वह मेरठ शहर में रहनेवाला एक अग्रवाल बनिया था। इसको दो लड़कियाँ तथा दो लड़के हुए। उसने बड़ी लड़की तथा लड़के को बेपढ़ा रखा किंतु छोटी लड़की को नागरी पढ़ाकर चिटठी-पत्री लिखना और घर का हिसाब लिखाना सिखा दिया। छोटे लड़के को मदरसे में अंग्रेजी पढ़ने के लिए भेज दिया गया। बड़े लड़के को अपने रोजगार में लगा दिया। छोटे लड़के को पढ़ाई पूरी होते ही रेल विभाग में नौकरी मिली और महिना 60 रुपये पाने लगा। बड़े लड़के की बहू अनपढ़ थी, किंतु छोटे लड़के की बहू पढ़ी-लिखी थी।

सर्वसुख का समधी सरकारी तहसीलदार होने के कारण अपनी बेटी को नागरी और बेटे को अंग्रेजी पढ़ाता है। आगरा कॉलेज में पढ़कर वकालत की परीक्षा पास करने के लिए उसके ताऊ के पास आगरा भेजता है। सर्वसुख का छोटा लड़का अपने लड़के को रुड़की कॉलेज भेजकर इंजीनियर बनाना चाहता है परंतु उसकी पत्नी उसे वकील बनाना चाहती है वह पति से कहती है कि - "नहीं इसकू तो तुम वकील बनाना मेरा ताऊ आगरे में वकील है हजारों रुपये महीने की आमदनी है और घर के घर है किसी का नौकर नहीं। इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज में शिक्षा को

www.ignited.in

महत्व दिया जा रहा था। लड़कों को मदरसे में अंग्रेजी पढ़ाने का चलन धीरे-धीरे बढ़ रहा था। इसका प्रमुख कारण यह भी था कि अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों को सरकारी नौकरियाँ आसानी से मिलती थी।

भाग्यवती (श्रद्धाराम फिल्लौरी सन 1877 ई.)

श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सन 1877 ई. में भारतखंड की स्त्रियों को गृहस्थ धर्म की शिक्षा देने के लिए इस उपन्यास की रचना की। इसकी रचना 1870 ई. में ही हो गई थी परंतु उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो पाई। "उसके रचे जाने के दस वर्ष बाद 1887 ई. के आरंभ में उनकी विधवा श्रीमती महताब कौर ने प्रकाशित कराई। अप्रैल 1887 के हिंदी प्रदीप में उसकी संक्षिप्त समीक्षा छपी।"

'भाग्यवती' में हम समाज तथा व्यक्ति के बीच संघर्ष देखते हैं। राल्फ फॉक्स की मान्यता है कि "उपन्यास का संबंध व्यक्ति से है, वह समाज और प्रकृति के साथ व्यक्ति के संघर्ष का महाकाव्य है, उसका विकास उस समाज में ही संभव हो सकता था जिसमें समाज और व्यक्ति के बीच संतुलन नहीं है और मनुष्य एवं मनुष्य या प्रकृति के बीच संघर्ष है। ऐसा समाज पूँजीवादी समाज है।"[8] व्यक्ति और समाज के संघर्ष की झलक हिंदी उपन्यास की प्रथम नायिका भाग्यवती के जीवन में भी देखने को मिलती है।

पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सं. 1934 में लिखी भूमिका में इस उपन्यास का शीर्षक 'भाग्यवती' ही क्यों रखा है, यह स्पष्ट कर दिया है। वे लिखते हैं कि "बहुत दिनों से इच्छा थी कि कोई ऐसी पोथी हिंदी भाषा में लिखूँ कि जिसके पढ़ने से भारतखंड की स्त्रियों को गृहस्थ-धर्म की शिक्षा प्राप्त हो, क्योंकि यद्यपि कई स्त्रियाँ कुछ पढ़ी-लिखी तो होती है, परंतु सदा अपने ही घर में बैठ रहने के कारण उनको देश-विदेश की बोलचाल और अन्य लोगों से बरत व्यवहार की पूरी बुद्धि नहीं होती। और कई बार ऐसा भी देखने में आया कि जब कभी उनको विदेश में जाना पड़ा तो अपना गहना-कपड़ा, बरतन आदि पदार्थ खो बैठीं और घर में बैठी भी किसी छली स्त्री-पुरुष के बहकाने से अपने हाथ से अपने घर का नाश कर दिया। फिर यह भी देखा जाता है कि बहुत स्त्रियाँ अपनी देवरानी, जेठानियों से आठों पहर लड़ाई रखतीं और सासु-सुसरे और अपने भत्ता का निरादर करने लग जाती हैं। कई स्त्रियों को अपने घर के हानि-लाभ की ओर कुछ ध्यान न होने के कारण वे घर का सारा ठाठ बिगाड़ लेती हैं और कइयों के घरों को नौकर-चाकर लूट-लूट खाते हैं और उनको संयम और यत्न से कुछ काम नहीं होता। कई स्त्रियाँ विपत्काल में उदास होके अपनी लाज को बिगाड़ लेतीं और अयोग्य और अनुचित कामों से अपना पेट पालने लग जाती हैं। और कई विद्या से हीन होने के कारण सारी आयु चक्की और चरखा घुमाने में समाप्त कर लेती हैं। इस कारण मैंने यह ग्रंथ सुग म हिंदी भाषा में लिख के इसका नाम 'भाग्यवती' रक्खा।

परीक्षा गुरु (लाला श्रीनिवासदास सन 1882 ई.)

1882 ई. में लाला श्रीनिवास दास द्वारा रचित उपन्यास 'परीक्षा गुरु' को हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास माना गया है। यह उपन्यास सामाजिक यथार्थ की चेतना का उपन्यास है। इस उपन्यास में तत्कालीन समाज के भारतीय जीवन में आनेवाली विकृतियों, उनसे उत्पन्न कुछ समस्याओं का चित्रण है। नवोदित मध्यवर्ग में देशोन्नति की जो भावनाएँ उत्पन्न हो रही थीं उसके चित्र भी मिलते हैं। अंग्रेजों की जीवन शैली से आकर्षित भारतीय नव युवक उनका अन्धानुकरण करने लगे। अमीरों के घर विलायती सजावटी चीजों से सुशोभित होने लगे थे। ऐसे कई द्रश्यों को उपन्यास में खींचा गया है।

रचनाकार ने मदनमोहन को कथावस्तु के केन्द्र में रखा है। परंतु ज्ञानचंद जैन ने लाला ब्रजकिशोर को उपन्यास का नायक माना है। उपन्यास में ब्रजकिशोर का व्यक्तित्व आदर्शोन्मुख है। "प्रामाणिकता तथा सावधानी को जीवन में उन्नति का मूलमंत्र मानने वाले, देशोन्नति की सच्ची भावनाओं से अनुप्राणित, परमेश्वर और स्वधर्म में दृढ़ विश्वास रखने वाले, सुधरे विचारों के नये शहरी मध्यम वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में श्रीनिवासदास ने उनका जो व्यक्तित्व खींचा है, वह अनूठा है।"[12] लाला मदनमोहन के रूप में नये जमाने के रईसों का चित्र प्रस्तुत करते हुए दिखाया गया है कि वे अंग्रेजी शासकों से मेल रखने में अपनी प्रतिष्ठा समझते थे।

वामाशिक्षक (मुंशी इश्वरीप्रसाद, मुंशी कल्याणराय 1883 ई.)

मेरठ के उर्दू मदरसे दस्तूर तालीम के अध्यापक-द्वय मुंशी इश्वरीप्रसाद मुदर्रिस रियाजी 1/4गणित1/2 और मुंशी कल्याणराय मुदर्रिस अव्वल 1/4प्रधानाध्यापक1/2 ने 'वामाशिक्षक' अर्थात दो भाई और चार बहनों की कहानी की रचना 1872 ई. में की। परंतु इसकी छपाई छापाखाने विद्यादर्पण् मेरठ से कल्याणराय ने 1883 ई. में करवाई। मुंशीद्वय ने वामाशिक्षक को रचने के पीछे क्या प्रेरणा रही है यह उपन्यास की भूमिका में ही स्पष्ट कर दिया है। वे लिखते हैं कि "इन दिनों मुसलमानों की लड़कियों के लिए तो एक दो पुस्तकें जैसे मिरातुल उरुस आदि बन गई हैं परंतु हिंदुओं व आर्यों की लड़कियों को पढ़ने के लिए अब तक कोई

www.ignited.in

ऐसी पुस्तक देखने में नहीं आई कि जिससे उनको जैसा चाहिए वैसा लाभ पहुँचे और पश्चिम उत्तर देशाधिकारी श्रीमन महाराजाधिराज लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की यह इच्छा है कि कोई पुस्तक ऐसी बनाई जाए कि उसमें हिंदुओं व आर्यों की लड़कियों को भी लाभ पहँचे और उनका शासन भी भली-भाँति हो। सो हम ईश्वर प्रसाद मुदर्रिस रियाजी और कल्याण राय मुदर्रिस अव्वल उर्दू मदरसह दस्तूर तालीम मेरठ ने बड़े सोच-विचार और ज्ञान-ध्यान के पीछे दो वर्ष में इस पुस्तक को उसी ध्यान से बनाया हैं।"[16] मुंशीद्वय ने यह उपन्यास खासतौर पर हिंदु तथा आर्यों की लड़कियों के लिए, सामाजिक कुचालों से उन्हें विमुख करने तथा सुचाल की शिक्षा प्रदान करने के लिए लिखी थी।

नूतन चरित्र (रत्नचंद्र 'प्लीडर' सन 1883 ई.)

नूतन चरित्र के रचनाकार रत्नचंद्र 'प्लीडर' है। सन 1883 ई. में इसके आरंभिक कुछ अंश 'हिंदी प्रदीप' में प्रकाशित हुए, परंतु उपन्यास पूरा हुआ सन 1887 ई. में। सन 1893 ई. में यह पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ। उपन्यास के आवरणपृष्ठ पर उपन्यास की विशेषता को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि "इसे 'अंग्रेजी नोविल्स की रीति पर' निर्मित तथा 'बालवृद्ध युवा स्त्री और पुरुषों' के लिए 'एक अति मनोहर स्वभावशोधक कहानी के द्वारा' 'धर्मयुक्त सांसारिक व्यवहार विषयक शिक्षा' प्रदान करने वाला"[19] उपन्यास है। नूतन चरित्र का प्रमुख विषय वस्तु प्रेम है। विवेकराम-चित्रकला तथा चेतराम-चित्रवल्लभा के द्वारा प्रेम, प्रेमी द्वारा प्रेमिका को प्राप्त करने के प्रयत्न तथा विरह का वर्णन हुआ है। उपन्यास के कथ्य पर आलोचना करते हुए गोपालराय लिखते हैं कि "नूतन चरित्र प्रेमाख्यानों के निकट है, पर इसका परिवेश इसे उपन्यास के निकट लाता है। उपन्यास की अधिकतर घटनाएँ हरथला स्टेशन, दिल्ली और फरीदपुर में घटित हैं, जो वास्तविक भौगोलिक स्थान हैं। स्टेशन, रेलगाड़ी आदि का उल्लेख भी परिवेश को आधुनिक तथा यथार्थ बनाता है।"[20] उपन्यास प्रेमाख्यानों के निकट होने पर भी इसमें नखशिख, श्रृंगारिक अलंकृत वर्णन नहीं मिलते।

चंद्रकांता (बाबू देवकीनंदन खत्री सन 1887 ई.)

बाबू देवकीनंदन खत्री द्वारा रचित 'चंद्रकांता' का प्रकाशन 1887 ई. में हुआ। चंद्रकांता का प्रकाशन हिंदी उपन्यास के इतिहास में एक ऐसी घटना है जिसने उपन्यास के स्वरूप में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया। "चंद्रकांता का पहला भाग काशी, नेपाली खपड़ा के हरिप्रकाश यंत्रालय में बाबू अमीर सिंह वर्मा द्वारा सन 1888 में छापा गया। इससे ज्ञात होता है कि 'चंद्रकांता' के पहले भाग का रचना-काल 1887 ई. और प्रथम मुद्रण-काल 1888 ई. है।"[27] "ऐयारी की अदभुत कार्रवाइयों, चालाकियों, वेश बदलकर शत्रुओं के दुर्ग में प्रवेश कर जाने तथा चुटकी बजा कर असंभवप्राय कार्य कर आने, देखते-देखते शत्रु दल के आदमी को भुलावा देकर बेहोश कर देने और गठरी बाँध कर तिलस्मी बंदीगृह में कैद कर आने तथा तिलस्मी करिश्मों और तमाशों का ऐसा अपूर्व और अभिभूत कर देने वाला वर्णन इन कथाओं में मिलता है, जो सामान्य पाठक को चकित कर देता है। पर खत्री जी पुरानी कथाओं की तरह अपनी कथा को रोचक बनाने के लिए अतिलौकिक घटनाओं की सहायता नहीं लेते।

स्वर्गीयकुसुम वा कुसुमकुमारी (किशोरीलाल गोस्वामी सन 1889 ई.)

सन 1889 ई. में किशोरीलाल गोस्वामी ने 'स्वर्गीय कुसुम व कुसुम कुमारी' की रचना आरंभ की। यह एक सत्य घटना पर आधारित उपन्यास है। लेखक इस उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं कि – "इसकी कहानी अपने मित्र पं. जगन्नाथ प्रसाद त्रिपाठी से सुनी बतायी है। यहाँ तक लिखा है कि उपन्यास के प्रमुख चार पात्रों के नाम कुसुम, गुलाब, बसंत तथा भैरो सिंह भी यथावत हैं। इस उपन्यास के आरंभिक अंश 1889 ई. में 'सारसुधानिधि' तथा 'विज्ञवृंदावन' में प्रकाशित हुए। 1901 ई. में इसका पुस्तक रूप में प्रकाशन हुआ।

'स्वर्गीयकुसुम व कुसुमकुमारी से पहले इन्होंने 'प्रणयिनी परिणय' और 'त्रिवेणी' की रचना की थी। ये दोनों रचनाएँ गोस्वामी जी के प्रारंभिक लघु उपन्यास हैं। "प्रणयिनी परिणय की पृष्ठ संख्या मात्र 23 है। ये दोनों ही प्रेमकथाएँ हैं, जो संस्कृत गद्यकथाओं की अलंकृत शैली में लिखी गई हैं। इन पर कादम्बरी का प्रभाव स्पष्ट है, जो 1879 ई. में ही हिंदी में अनूदित प्रकाशित हो चुकी थी। नायक-नायिका के प्रेम, विरह और मिलन का श्रृंगार रस की कसौटी पर खरा उतरनेवाला वर्णन इन उपन्यासों में मिलता है।

उपसंहार

उपन्यास आधुनिक साहित्य की प्रमुख गद्य विधा है। इसमें जीवन की बहुमुखी छवि की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए मिशेल जे राफा कहते हैं उपन्यास ऐसी कला है जिसमें मनुष्य सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से निरूपित होकर सामने आता है। उपन्यास भारत तथा पाश्चात्य साहित्य में आधुनिक युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। पाश्चात्य साहित्य में उपन्यास का उदय तब हुआ जब मध्ययुग के सामंती समाज का अंत होकर औद्योगिक सभ्यता का आविर्भाव हो

www.ignited.in

रहा था और नगरों में नवीन मध्यवर्ग की सत्ता स्थापित हो रही थी। परंतु भारत में उपन्यास का उदय अभिषप्त परिस्थितियों में हुआ। भारत में उपन्यास का जन्म 19 वीं सदी के मध्य तब होता है जब भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व था। यूरोप में उपन्यास का उदय जिन परिस्थितियों में हुआ वे परिस्थितियाँ भारत के संदर्भ में शायद ही नहीं थी। भारत में न ही औद्योगिकरण हुआ, न ही मध्यवर्ग का विकास। भारत में उपनिवेशवाद का एक अलग ही स्वरूप दिखाई दे रहा था। उपनिवेशवादी व्यवस्था में यहाँ जिस मध्यवर्ग का जन्म हुआ था वह यूरोप के औद्योगिक मध्यवर्ग से बिलकुल भिन्न था। उपनिवेशवादी व्यवस्था के कारण यहाँ जमीन्दारों का एक नया वर्ग उभरने लगा था, तो दुसरी ओर अंग्रेजी शिक्षा में पला बड़ा समुदाय विकसित हो रहा था, जो अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. घराऊ घटना, भुवनेश्वर मिश्र, प्रस्तुति: रामनिरंजन परिमलेंदु, विद्या विहार, 1660 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण - 2009.
2. चंद्रकांता, बाबू देवकीनंदन खत्री, प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-30, संस्करण - 1984.
3. चंद्रकांता संतति, बाबू देवकीनंदन खत्री, Google Electronic Book. 4-ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध्' Hindisamay.com
4. देवरानी जेठानी की कहानी, पं. गौरीदत्त, सं. गोपाल राय, ग्रन्थ निकेतन, रानीघाट, पटना-6, संस्करण - 2010.
5. धूर्त रसिकलाल, लज्जाराम मेहता, वेंकटेश्वर समाचार - 2011.
6. निःसहाय हिंदू, श्री. राधाकृष्णदास, ग्रंथलोक, 2014, गली 1 नवदुर्गा मंदिर के पास, वेस्ट गोरखपार्क शाहदरा, दिल्ली - 110032, संस्करण - 2009.
7. नूतन चरित्र, रत्नचंद 'प्लीडर', हिंदी प्रदीप - 2015.
8. नूतन ब्रह्मचारी, पं. बालकृष्ण भट्ट, हिंदी प्रदीप - 2016.
9. परीक्षा गुरु, लाला श्रीनिवासदास, सं. रामदर्श मिश्र, दिग्दर्शन चरण जैन, ऋषभचरण जैन एवं संतति, 21 दरियागंज, दिल्ली-6, संस्करण-1974.
10. बलवंत भूमिहार, भुवनेश्वर मिश्र, प्रस्तुति: रामनिरंजन परिमलेंदु, विद्या विहार, 1660 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-02, संस्करण – 2009.
11. भाग्यवती, पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी, नालंदा प्रकाशन, भुलभुल्लैया रोड, महरौली, नई दिल्ली-110030, संस्करण-2016.
12. वामा शिक्षक, मुंशी ईश्वरी प्रसाद तथा मुंशी कल्याणराय, सं. गरिमा श्रीवास्तव, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया-ए-5, ग्रीन पर्क, नई दिल्ली-16, संस्करण-2009.

Corresponding Author

Renu Mittal*

Assistant Professor, RKSD College, Kaithal, Haryana